International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 12-09-2020; Accepted: 27-09-2020; Published: 13-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 75-83

मूक लोकतंत्र से कविताई संवाद

हरिकेश गौतम

पीएचडी शोधछात्र, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारतीय समाज की सामाजिक, धार्मिक,आर्थिक एवं राजनीतिक संरचना ने आरंभिक दौर से समाज के बड़े हिस्से को हाशिए पर रखा | इस समाज में एक वर्ग ऐसा रहा जो सर्व संपन्न होने के कारण साहित्य को मनोरंजन के तौर पर लिखना पढ़ना शुरू किया तो दूसरा वर्ग ऐसा था जो अनेक वंचनाओं से पीड़ित होने के कारण अपने साहित्य में भी अपनी निजी भोगी हुई पीड़ा एवं अनुभूतियों को उकेरने का प्रयास करता है अर्थात इस वर्ग के लिए साहित्य साध्य नहीं बल्कि अपनी मूक आवाज को सवाक करने का साधन है | इस रूप में सशक्त रूप से सामाजिक व्यवस्था से कविताई संवाद का प्रारंभ संत आंदोलन के समय संतो द्वारा होता है | यहां कविता अनेक सामाजिक विद्रूपदाओं से प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करती है |

आधुनिक काल की दलित कविता का दलित आंदोलन से गहरा संबंध है | इस रूप में प्रथम बार स्वामी अछूतानंद हरिहर ने कविता को सामाजिक आंदोलन के लिए हथियार के रूप में प्रयुक्त किया | तब से लेकर आज के दौर तक दलित कविता ने लंबा सफर तय कर लिया है | आज की दलित कविता न केवल अपने शिल्प,बिम्ब एवं शैली को नया आयाम दे रही है,बल्कि उसके साथ-साथ दलित समाज का यथार्थपरक आईना दिखाते हुए उसकी निजी अनुभूति की अभिव्यक्ति तथा भारतीय लोकतंत्र में उसके लोकतांत्रिक,मानवीय अधिकारों की मांग की कविताई अभिव्यक्ति भी बन रही है| बाबा साहब की जन्म स्थली महाराष्ट्र होने के कारण दलित आंदोलन एवं दलित साहित्य की पृष्ठभूमि में मराठी कविता का विशेष महत्व है | यही वजह है कि आज की मराठी कविता का सामाजिक संदर्भ अत्यंत समृद्ध हुआ है | दामोदर मोरे बुनियादी तौर पर मराठी कविता से जुड़े होने के बावजूद हिंदी दलित कविता के साथ-साथ अंग्रेजी दलित कविता के प्रमुख हस्ताक्षर के रूप में जाने जाते हैं | प्रस्तुत शोध पत्र में मैंने उनके चार काव्य संग्रह 'सदियों के बहते जख्म', 'नीले शब्दों की छाया में', 'पलके सुलग रही हैं', तथा 'पिछला चक्का' में व्यक्त राजनैतिक,लोकतांत्रिक संचेतना को केंद्रीय विषय के रूप में लिया है |

दामोदर मोरे अपने समय के सजग और संवेदनशील कवि होने के साथ-साथ सामाजिक आंदोलन से जुड़े हुए कवि हैं | कवि दामोदर मोरे जी लेखन के क्षेत्र में पूरी तैयारी के साथ उतरते हैं | इस तैयारी में वे अकेले नहीं हैं | अपने समय के कलमकारों को भी अवाह्न तथा आगाह करते हैं ताकि जन अधिकारों की तिलांजलि कर जनता के धन पर मलाई खाने वाले सत्ताई भेड़ियों से मुठभेड़ कर सकें

अंधेरे के क्रूर पंजे ने
हासिल की है सत्ता
सत्य चिल्ला रहा है
सत्ता की बूट के नीचे |
बनाया है अंधेरे ने
रोशनी को गुलाम
तो भी.....
क्यों सोए हुए हैं
कुम्भकरण की तरह
कलम और कलाम |1

दामोदर मोरे जी अंबेडकरी विचारधारा के कवि हैं | कवि मोरे जी का कविता लेखन साधन है |साध्य तो कबीर का 'अमरदेस',रैदास का 'बेगमपुरा' तथा बाबा साहब के सपनों का समता स्वतंत्रता न्याय एवं बंधुत्व से गुंफित समाज है, इसीलिए वह कविता को इस मिशन में हथियार के रूप में प्रयोग करते हैं | कवि मोरे जी इसी उद्देश्य से काव्य को नई दृष्टि से परिभाषित भी करते हैं-"सामाजिक उत्पीड़न, वेदना एवं आंदोलन की संवेदना को नजरअंदाज करने वाले भगोड़े एवं स्वार्थी रचनाकार को मैं कवि नहीं मानता | उनकी रचना को मैं कविता नहीं मानता | मैं,तो उस आंबेडकरी कविता को चाहता हूं जिसमें संघर्ष का संगीत हो, जिसमें स्वतंत्रता की रणभेदी बजती हो, समता का गगनभेदी जयघोष सुनाई देता हो, जिसमें भ्रातृत्व का झरना बहता हो,जो सांप्रदायिकता की दाहकता को ठंडा करते हुए आदमी को आदमी बनाने का सबक सिखाती हो |"2 इसीलिए कवि मोरे जी कभी कबीर की भांति व्यवस्था पर आक्रोश व्यक्त करते हैं ,तो कभी इस दुर्दशा के जिम्मेदार लोगो को चुनौती देते हैं तो कभी सामाजिक हित के लिए नई राह भी दिखाते हैं | अपनी कविताओं में लोकहित के लिए वर्तमान समय से संवाद स्थापित करने के कारण उनके काव्य की महत्ता और भी बढ़ जाती है |

दामोदर मोरे का बचपन (जन्म 1953 ई.) देश की आजादी के बचपन (1947ई.) से मात्र 6 साल छोटा है |आजादी आगे-आगे जवान हो रही थी तो कवि मोरे उसके पीछे | अपने बाल्यकाल से ही उनके मानस पर जातीय दंश के प्रभाव के साथ ही साथ परिवार के आर्थिक अभाव का भी प्रभाव पड़ रहा था लेकिन दूसरी तरफ उम्मीद थी कि शायद कुछ वर्षों में हमारी पारिवारिक तथा सामाजिक स्थिति ठीक हो जाएगी | आज़ाद भारत पुनः सोने की चिड़िया के गौरव को प्राप्त करेगा | दुर्भाग्य

वह स्वप्न आज भी महज़ एक स्वप्न ही बना है जो यथार्थ से बहुत दूर नजर आता है | दामोदर मोरे जी ने अपने सामने ही आजादी के कल्पित स्वप्न को खंडित होते देखा है | लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के बावजूद उन्होंने अपने निजी जीवन के अतिरिक्त समाज के बड़े वर्ग को शिक्षा, रोजगार,रोटी,सुरक्षा और सम्मान जैसे मानवीय अधिकारों से वंचित होते देखा | उनकी इस पीड़ा ने काव्य लेखनी के माध्यम से आज़ादी के छलछद्म का पर्दाफास कर दिया | इसलिए अपने ही सामने जवान हुई आज़ादी से वह सवाल करते हैं -

प्रिय आजादी !
तू सोती रही
जमीदार और अमीरों की
मखमली शैय्या पर
हम तड़पते रहे
करवटें बदलते रहे
पचास साल
तेरे सपनों के घोड़े पर
सवार होकर|3

सन 1947 में हमारे देश को राजनीतिक स्वतंत्रता तो प्राप्त हो गई थी लेकिन सामाजिक, आर्थिक स्वतंत्रता और लोकतंत्र प्राप्त होना आज भी बाकी है | आज भीं समाज का बड़ा वर्ग अनेक असमानताओं का शिकार हो रहा है | आज़ाद भारत में संविधान में समस्त भारतीय नागरिकों के लिए समता,स्वतंत्रता ,न्याय,एवं बंधुत्व का प्रावधान किया गया है लेकिन आज भी इस देश के अनेक नागरिक उत्पीड़न के शिकार होने के बावजूद न्याय के लिए भटकते हैं,भूख से लाचार होकर दम तोड़ देते हैं ,महिला सुरक्षा कवच,संविधान में अनेक प्रावधान होने बावजूद महिलाएं अनेक उत्पीड़न की शिकार हो रही हैं | इन हालातों से बाहर आने के लिए यह वर्ग निरंतर प्रयास कर रहा है | इस प्रयास में उसका एक मात्र संबल है संविधान प्रदत्त उनके अधिकार लेकिन अफसोस की बात यह है कि जिन राजनीतिक पार्टियों को चुनकर सत्ता मे लाया गया कि संविधान को पूरी तरह लागू कर वह हमारे अधिकारों को हमें प्रदान करेंगी | वही पार्टी संवैधानिक अधिकारों का गला घोटने के साथ-साथ संविधान बदलने की भी बात कर रही है | वह इस बात को जानते हैं कि संविधान के न रहने पर गरीब, दलित, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों, आदिवासियों कि क्या दुर्दशा होगी | इस पर कवि दामोदर मोरे जी के सब्र का बांध टूट जाता है | इसीलिए वे इस चाल को बख़ूबी उघाड़ कर रख देना चाहते हैं कि संविधान को हटाकर पुरानी मनुस्मृति लागू करने की अदृश्य कोशिश हो रही है | प्रकान्तर से वह बहुजनों को सतर्क भी कर रहे हैं -

उन्होंने यह बदला
बदलने जा रहे संविधान अब
जो देश की आधारशिला है
उनकी काली करतूत का
करिश्मा है यह-
अतीत के मुर्दे को वे
जिंदा बना रहे हैं |4

आज की गलाकाट राजनीति के दौर में चुनाव, देश के आधारभूत विकास के एजंडे के साथ नहीं बल्कि धर्म, जातिवाद, संप्रदायवाद,धनबल, गुंडई के आधार पर लड़ा जा रहा है| यह अलग बात है कि देश के विकास और जनता के हितैषी होने का जबर्दस्त अभिनय चुनाव के दौरान किया जाता है | यही वजह है कि आम जनता हर चुनावी वर्ष में लोकतंत्र के पर्व में इसी उम्मीद से शामिल होती है कि अमुक पार्टी / नेता हमारी मूलभूत सुविधाओं के अनुरूप काम करेगा लेकिन चुनाव परिणाम के बाद महसूस करता है कि वह हकों के रक्षक नहीं बल्कि उसके हक़ भक्षक की सत्ता में जीवन यापन कर रहा है | सत्ता में आने के बाद यही नेता जनता के पैसों पर न केवल राज करते हैं बल्कि उसी जनता का शोषण करते है | जनता लाचार होकर उनकी सत्ता शक्ति के सामने घुटने टेक देती है और पाँच साल तक धर्म,जाति आदि के नाम पर नरसंहार का तांडव चलता रहता है-

.....और उस दिन
नहीं हुआ सवेरा
धर्म का तिलक लगाकर
लाशों की सीढ़ी बनाकर
सत्ता में आया अंधेरा
अंधेरे के सामने
घुटने टेक दिए रोशनी ने |5

आजादी की लड़ाई लड़ने वाले क्रांतिकारियों का एक सपना था कि भारत देश आजाद होने के बाद विकास, भाईचारा के साथ विश्व शक्ति बनकर उभरेगा | संविधान निर्माता डॉ भीमराव अंबेडकर के साथ-साथ संविधान सभा के प्रत्येक सदस्य एक- एक अनुच्छेद तैयार करने में घंटों बहस करने के बाद उस अनुच्छेद पर सर्वसम्मति से निर्णय लेकर लोक हित को ध्यान में रखते हुए उसे संविधान में शामिल किया करते थे | संविधान निर्माण के दौरान यही स्वप्न रहा होगा कि भारत, अंग्रेजी गुलामी से मुक्त होकर समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व एवं न्याय प्रियता से नए कीर्तिमान स्थापित करेगा | वर्तमान समय में चंद दिनों में कोई भी विधेयक जनता के बड़े भाग के हित का बिना ख्याल रखे सरकार द्वारा पास करा लिया जाता है | डॉक्टर अंबेडकर ने कहा था कि 'संविधान कितना ही अच्छा क्यों न हो अगर उसको लागू करने वाले लोग गलत होंगे वह संविधान अंततः गलत साबित होगा लेकिन संविधान कितना ही गलत क्यों न हो अगर उसे लागू करने वाले लोग ईमानदार और अच्छे होंगे तो वह संविधान अंततः अच्छा साबित होगा |' आज के दौर में सरकार जिस तरह से संविधान का गला घोटने के लिए तैयार है, वह भारत जैसे बड़े लोकतांत्रिक देश के लिए खतरा ही है | कवि मोरे जी लंबे समय से अपने समय की राजनीति में संविधान को संचालित करने वाले लोगों की संविधान विरोधी गतिविधियों को देखते आयें हैं

| आज की राजनीति में ईमानदार और आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति धनकुबेरी राजनीति के सामने खुद को या तो राजनीति से बाहर कर लेता है या फिर सत्ता में बैठे इन राजनीतिक गिद्धों द्वारा उसका शिकार कर लिया जाता है और अंततः सत्ता पर वही मांसाहारी गिद्ध काबिज हो जाते हैं | इस परिस्थिति को देखते कवि दामोदर मोरे जी भारतीय जनमानस से चीखकर कहते है कहते हैं-

मुझे बर्दाश्त नहीं होता
राज सिंहासन पर
गिद्ध का बैठ जाना
मुझे बर्दाश्त नहीं होता
शैतान के हाथों में
भारतीय संविधान का होना
मुझे बर्दाश्त नहीं होता
खून से रंगे हाथों से तिरंगा फहराना |6

दामोदर मोरे जी अपनी कविताओं के माध्यम से भारतीय राजनीति में जातीय समीकरण को तकनीकी तौर पर समझने और समझाने की कोशिश करते हैं | भारतीय राजनीति इस देश की जातीय संरचना का भरपूर लाभ उठाती है | इसके लिए वह जातीय समीकरण का ऐसा जाल तैयार करती है जिसमें हर जाति का शिकार ज्यादा संख्या में किया जा सके | जब यह जातीय शिकार विफल होता नजर आता है तो राजनेता अपनी चाल थोड़ी बदल देता है | अन्य जातियों के अलावा खासकर दलित जाति को केंद्र व राज्य की सरकारें अपने राजनीतिक चारे के रूप में प्रयोग करती आई हैं | इस प्रयोग में उदारवाद तथा कट्टरवाद का प्रयोग औजार के रूप में होता आया है | उदारवाद के माध्यम से राजनेता पहले अपने को दलित का सबसे बड़ा हितेषी बताते हुए उसके सपने को पूरा करने के वादे के साथ कुछ आर्थिक मदद भोजन, साड़ी,शराब,मीट जैसे सामान्य जीवन की वस्तुओं से छलने का प्रयास करता है यदि यह विधि सफल नहीं होती तब धन,बल,सत्ता शक्ति से अनेक प्रताड़नाओं के साथ उन पर दबाव बनाया जाता है जिससे भयाक्रांत होकर मतदाता उस पार्टी को वोट करें | दलित समाज से निकला पढ़ा -लिखा नववर्ग जो डॉक्टर भीमराव अंबेडकर को अपने मसीहा के रूप में व्याख्यायित ही नहीं करता बल्कि सामाजिक आंदोलन से लेकर राजनीतिक आंदोलन में उनके विचारों को ही आधार बनाता है | इसका कारण स्पष्ट है कि डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने मनुवादी सामाजिक व्यवस्था से लड़कर भारत देश में संविधान के साथ ही साथ सदियों से वंचित वर्ग को शिक्षा,समानता,रोजगार और सम्मान प्रदान किया | दिलचस्प बात यह है कि जिस अंबेडकर ने तर्क और ज्ञान के आधार पर पाखंडो,अंधविश्वासों को काट छांट कर समाज में मानवता का संदेश दिया आज उस अंबेडकर को राजनीतिक पार्टियों में अपनाने की होड़ लगी है | भीमराव अंबेडकर आजीवन जिस विचारधारा से संचालित लोगों से तिरस्कार और अपमान पातें आयें आज उसी विचारधारा की पार्टियांअंबेडकर को वोट बैंक के आइकॉन के रूप में उनके अनुयायियों तथा विचारों को नहीं बल्कि उनको आत्मसात करने का तेजी से छलछद्म कर रही हैं | प्रकारांतर से कह सकते हैं अंबेडकरवाद का यह भक्ति काल भी चल रहा है | 'जिन- जिन चीजों के बाबा साहब खिलाफ थे वह सारे पाखंड किए जा रहे हैं | बाबा साहब को अवतार कहा जा रहा है | यहां तक कि उन्हें ब्रह्मा, विष्णु,महेश तक बताया जा रहा है | जयपुर में बीते 13 अप्रैल को बाबा साहब के 126 वी जयंती पर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के नाम पर भक्ति संध्या का कार्यक्रम हुआ | भीलवाड़ा में 126 लीटर दूध से बाबा साहब की प्रतिमा का अभिषेक किया गया |अभिषेक के दौरान बकायदा पंडित बुलाए गए मंत्रोच्चार हुआ, गाय के गोबर, दूध, दही और गोमूत्र के पंचामृत से अभिषेक किया गया और इस तरह अछूत अंबेडकर बीते बृहस्पतिवार को भीलवाड़ा में पवित्र कर दिए गए | रायपुर में 5100 कलशों की यात्रा निकाली गई | जिन महिलाओं को अधिकार दिलाने के लिए बाबा साहब मंत्री पद छोड़ दिए थे उन्हीं महिलाओं के सिर पर नारियल और कलश रखा गया |'7 बाबा साहब की विरोधी विचारधारा की पार्टियों द्वारा बाबा साहब के आत्मसाती करण की चाल को उघाड़ना आवश्यक है | एक तरफ बाबा साहब को अपनाने के अभिनय में पार्टियां अनेक हथकंडे अपना रहीं हैं ,वहीं दूसरी तरफ उन्हीं द्वारा लिखित भारतीय संविधान को खत्म या निष्क्रिय करने की भीतरी चाल भी साल -साथ चल रहीं हैं | दामोदर मोरे जी इस चाल को समझ रहे हैं कि हरी घास में छिपा हरा साँप दूर से ही घास की तरह आकर्षक लग रहा है लेकिन सच्चाई यह है की वह सांप संविधान रूपी हरियाली में जहर भी फैला रहा है | इसीलिए मोरे जी कहते हैं कि संविधान को जहरीले सांप ने लपेट लिया है | वे इसका कारण बताते हुए कहते कि - इसका प्रमुख कारण संवैधानिक व्यवस्था से लाभ पाकर पाशविक जिंदगी से मुक्ति पाकर मानवीय जिंदगी जीने वाला वर्ग है | इस संविधान की बदौलत इस वर्ग को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, अधिकार,सम्मान आदि मिला लेकिन यही वर्ग संविधान की रक्षा में तत्पर नहीं है | इसीलिए कवि दामोदर मोरे अपनी जिम्मेदारी समझते हुए अपनी कविता के माध्यम से संविधान से खुद संवाद स्थापित करते हैं | प्रतीक रूप में अपने इस चिंता को संविधान की चिंता के रूप मे व्यक्त करते हैं -

घबराकर मैंने
भारतीय संविधान से कहा-
तुम्हें तो कोब्रा ने लपेट लिया है
तो भी तू चुप....?
हताश होकर वह बोला-
'धीरे- धीरे फैल रहा है वह जहर
मैं क्या करूं?
यहां तो सब अंधे ही आते हैं नजर |
संविधान से मैंने कहा-
धीरे- धीरे तेरे पन्ने
फाड़े जा रहे हैं
तो भी तू चुप ...?

अपनी ही गीली आंखें पोछते
वह बोला-
'क्या करूं?
जिनके लिए मैं हूँ
वे जुबान होते हुए भी गूंगे हैं |8

आज के दौर का जागरूक युवा सत्ता पक्ष की दोमुंही चाल को कायदे से समझ रहा है | सत्तासीन पार्टी जहां एक मुंह से अंबेडकर तथा अंबेडकरवादियों को निजी लाभ के लिए पुचकार रही है वहीं दूसरे मुंह से अंबेडकर तथा अंबेडकरवादियों को निगलने की कोशिश भी कर रही है | एक तरफ यह पार्टी बाबा साहब के हितैषी होने की बातें करती हैं दूसरी तरफ इसी के शासनकाल में बाबा साहब की मूर्तियों को जगह-जगह क्षतिग्रस्त किया जा रहा है | अंबेडकर के अनुयायियों द्वारा इस निंदनीय कार्य के विरोध पर उन्हें सत्ता शक्ति की धमक से शांत कराने की भी कोशिश की जा रही है | एक तरफ दलित हिताय का नाटकीय प्रदर्शन है तो दूसरी तरफ नरसंहार का तांडव | हरिकेश गौतम की कविताई में कहें तो आज के हालात कुछ इस तरह है-'चारो दिशाओं से निकल रही /आग की लपटें / जो / जला रही है /लोकतंत्र की रीढ़ को कोयले सा / इसमें झुलस रहा है / मजदूर,किसान,दलित,आदिवासी और स्त्री / इन्सान झपट रहा है /आदमखोर की तरह / दूसरे इंसानों पर / सूंघकर जाति,धर्म,लिंग और नस्ल / सूंघकर सत्ता की उदासीनता को /वह पैंतरे मार रहा चारो ओर /धन,बल और लिंग से / सत्ता की गोंद में बठैकर / नाप रहा लोकतंत्र की परिधि को / जो उसके सत्ता मद में /अदनी सी दिख रही है |' लेकिन'यह बहुजन समाज की नई पीढ़ी है, जो भूख की आग में तप कर विद्यालयों से विश्वविद्यालयों तक सनातनी व्यवस्था के पोषक कुछ गुरुघंटालों तथा कर्मचारियों से सामना करते हुए समाज,देश और राजनीति को समझने और समझाने की संवैधानिक दृष्टि विकसित कर रही है | सत्ता को इस नई पीढ़ी से चुनौती का डर है इसी वजह से इन्हें विशेष रूप से लक्ष्य कर या तो प्रताड़ित किया जाता है या मार दिया जाता है | रोहित वेमुला, कलबुर्गी, पानसरे,नरेंद्र दाभोलकर, गौरीलंकेश इस बात के पुख्ता साक्ष्य हैं | दामोदर मोरे आज के जलते समय के खुद भी साक्षी हैं | उनके विजन में मानवीय गरिमा को संजोए भारत है लेकिन यथार्थ रूप में आजादी के इतने वर्षों बाद भी अधिकांश दलितों की स्थिति जैसी की तैसी बनी है | इस तरह की नरभक्षी राजनीति और राजनेताओं से उनकी आँखों में आंखे डालकर दामोदर मोरे जी,दलितों के प्रति उनके कृत्यों को बताते हैं -

तेरा नाम लेते हुए
दलितों के जलते घर
झुलसे हुए असहाय पंछी
उनके घायल हुए पंख
हूल मारते हैं कलेजे में |9

अधिकांश भारतीय साहित्य में गांव को आदर्श रूप में प्रस्तुत करते हुए उसका महिमामंडन किया गया है | गांधी जी ने भी इसी आदर्शपरक लहजे में कहा था कि 'असली भारत तो गांव में बसता है'| लेकिन इसके विपरीत दलित कविता ने गांव के आदर्शमयी ढांचे को तोड़ कर उसके भीतर के यथार्थ को समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया | अभी तक साहित्य में एक तरफ गाँव के मिट्टी की सौंधी खुशबू महक रही थी तो दूसरी तरफ खेतों में लहलहाती फसल गाँव के बाहर रहने वाले पाठकों को आकर्षित करती रही,लेकिन दलित साहित्य लेखन के माध्यम से गाँव का वह हिस्सा सामने आया जिसको कभी साहित्य में जगह ही नही दी गयी थी | दलित कवियों ने ग्रामीण जीवन में अभावों से ग्रस्त, भूख से बिलबिलाते बच्चों के रुदन,आर्थिक जिल्लत झेलते परिवार, स्वतंत्र भारत में परतंत्र भारत की तरह महज रोटी के टुकड़े के बदले सामंती गुलामी के शिकार अपमान भरी जिंदगी जी रहे वर्ग के यथार्थ को साहित्य के माध्यम से समाज के सामने प्रस्तुत किया | दामोदर मोरे जी का बचपन इसी तरह से गाँव में व्यतीत हुआ है | आज भी गाँव में यही त्रासदी विद्यमान है | इसीलिए कवि दामोदर जी गाँव के इस तिलस्माई स्वरूप को तोड़ते हैं, जहां शोषण का शिकार ग्रामीण जीवित होते हुए भी मानवीय अधिकारों से वंचित जिंदा लाश बनकर रह गया है -

अन्याय सहती
रहती है
जिंदा लाशें जहां …
उसे मैं
गाँव
कैसे कहूँ ....|10

लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के कारण भारतीय गाँव लोकतंत्र के मौखिक पहचान से वंचित नहीं हैं | हर पाँच वर्ष बाद नेता ग्रामीणों का वोट लेने के लिए चुनावी वादों से पेट भरने में पीछे नहीं हटते | दामोदर मोरे ग्रामीणों के लिए बिना कुछ किए इन ग्रामीणों के वोट का शिकार करने वाले ऐसे भेड़ियों पर अपनी पैनी नजर रखते हैं | अभावों में जीवन व्यतीत कर रहे ग्रामीणों को इन नेताओं द्वारा झूठे प्रलोभन से कैसे छला जाता है? यह कवि मोरे जी की कविता से बखूबी देखा और समझा जा सकता है -

किए वादे धुआंधार..
आपको घर देंगे..बैंक से कर्ज देंगे
जमीन देंगे और निरोध भी'
इनके भरोसे पर रहे
एक दिन...
दो दिन...
ऋतु चक्र चलता रहा
नए वादे ! जिंदाबाद !
नई क़लम वाली झोपड़ियां जिंदाबाद !
नई बस्ती जिंदाबाद
हुआ ऐसा :

झोपड़िया पहले ही बारिश में गिर गई
बैंक फैलाने लगे हाथ
और जमीन सूखी बंजर
पशु भी न भूल कर देखें जिसे |11

बच्चे किसी भी देश के सर्वोच्च संपत्ति होते हैं | यही बच्चे अपने देश के भविष्य को निर्धारित करते हैं | एक लोकतांत्रिक राष्ट्र की जिम्मेदारी बनती है कि वह अपने देश के नागरिकों की शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करे | भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21-A में लिखा गया है कि ' राज्य 6 से 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा इस प्रकार प्रदान करेगा जिस प्रकार से राज्य विधि के अधीन निर्धारित करें |'12 भारत के संदर्भ में यह एक दिवा स्वप्न की तरह दिखाई देता है | ' 2011 के जनगणना(सेंशस) के मुताबिक देश के 8 करोड 40 लाख बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं | जनगणना का यह भी हैरान कर देने वाला डाटा जारी किया गया कि हमारे देश भारत के 8 करोड 40 लाख स्कूल ना जाने वाले छात्रों की संख्या इंग्लैंड;जर्मनी,फ्रांस,इटली,और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों की जनसंख्या से भी बहुत ज्यादा है|'13 विश्व गुरु का सपना लिए भारत देश के लिए यह बेहद शर्मनाक स्थिति है |इसका प्रमुख कारण आर्थिक विपन्नता है | माँ -बाप बचपन में ही इन बच्चों को आर्थिक अभाव में जीवकोपार्जन के लिए काम पर लगा देते हैं | इनके अलावा कुछ ऐसे गरीब व जागरूक गार्जियन हैं जो मजदूरी कर ,खुद भूखे पेट रहकर बच्चों को पढ़ाते हैं | दामोदर मोरे के बचपन में शिक्षा की व्यवस्था तथा आर्थिक विपन्नता की जो स्थिति उस समय थी वह आज भी भारत के सामने लगभग उसी रूप में चुनौती के रूप में विद्यमान है |आखिर कब तक माँ अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए मजदूरी करती रहेगी -

है मगर याद ताजा ज़ख्म की तरह
कल ही तो मेरी शिक्षा के खातिर
मेरी मां भूखी रहकर
इकट्ठा कर रही थी निबौरी
बेचने के लिए | 14

भारत में शिक्षा का निजीकरण तेजी से बढ़ रहा है | एक तरफ जहां सरकारी विद्यालयों,विश्वविद्यालयों की स्थिति लगातार बदहाल होती जा रही है वहीं दूसरी तरफ निजी विद्यालयों , विश्वविद्यालयों की स्थिति दिन- प्रतिदिन बेहतर होती जा रही है | पूरे दिन की अधिकतम 500 रूपये मजदूरी करने वाला परिवार 5000 से 10000 प्रतिमाह की शुल्क वसूलने वाले निजी विद्यालय में अपने बच्चे को कैसे पढ़ा सकता है ? यही वजह है कि भारतीय समाज में गरीब वर्ग इस महंगी शिक्षा से वंचित होता जा रहा है | दामोदर मोरे के बचपन की शिक्षा नंगे पाँव ,फटे लिबास तथा भूखे पेट प्राप्त हुई है | दामोदर मोरे जी के बचपन की ही तरह आज भी भारत के अधिकांश बचपन की वही स्थिति है,जो विकसित देशों में सुमार होने का सपना लिए भारत देश के लिए चुनौती है | दामोदर मोरे जी अपने बचपन को लोकतंत्र के सामने प्रस्तुत करते हुए भारतीय जनमानस और भारतीय लोकतन्त्र के सामने यह प्रश्न रखते हैं कि आखिर आज़ादी के 70 साल बाद भी स्थिति में सुधार क्यों नहीं हो रहा है-

मेरा बचपन …
स्कूल जा रहा था
जूता नहीं था
पाँव में |
मेरा बचपन …
स्कूल जा रहा था
फटे लिबास में |
मेरा बचपन …
जल रहा था
भूख की ज्वाला में |15

भारतीय वर्ण व्यवस्था में जिस प्रकार निम्नवर्गीय समाज को उसके मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया था उसी प्रकार स्त्रियों को भी मानवीय अधिकारों से वंचित रखते हुए उनके लिए धर्म,संस्कृति, रिवाज,आदि के नाम पर अनेक संहिताएं बनाई गई थी | राष्ट्रपिता महात्मा ज्योतिबा फूले ने 1848 ई. में शूद्र- अति शूद्र महिलाओं के लिए स्कूल खोला था | भारत में कहीं भी खुलने वाला अपने आप में अपनी तरह का यह पहला स्कूल था लेकिन भारत के इतिहास में ज्योतिबा फूले को महत्त्व नहीं दिया गया | भारत की प्रथम महिला शिक्षिका राष्ट्रमाता सावित्रीबाई फुले ने स्त्री शिक्षा के माध्यम से तथा बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने हिंदू कोडबिल के माध्यम से स्त्रियों को मजबूत करने की जो पहल की थी वह भारतीय महिला शिक्षा और जागरण का ऐतिहासिक कदम था |यद्यपि कि पहले की अपेक्षा महिलाओं की स्थिति में सुधार जरूर हुआ है लेकिन लोकतांत्रिक राष्ट्र में महिला सुरक्षा तथा उनके अधिकारों का हनन आज भी बेहद चिंतनीय है | दामोदर मोरे भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की वर्तमान हालात पर बेहद चिंतित हैं | यहां कभी उत्तर प्रदेश के उन्नाव में मोना को जिंदा आग के हवाले कर दिया जाता है तो कभी मथुरा में महिला पुलिस कांस्टेबल पर तेजाब से हमला कर दिया जाता है ,तो कभी कश्मीर की आसिफा जैसी मासूम बच्ची के साथ रेप होता है तो कभी गौरी लंकेश जैसी पत्रकार की निर्मम हत्या | यह आजाद भारत की वह सच्चाई है जिस पर यकीन नहीं होता | महाराष्ट्र के भंडारा जिले के खैरलांजी गांव में 29 सितंबर 2006 को एक दलित परिवार के 4 सदस्यों 2 महिला सदस्यों की हत्या के पहले पूरे गांव में नंगा घुमाया गया | दामोदर मोरे इस घटना के पश्चात अपने विदीर्ण हृदय की पीड़ा को जहां शब्दों के माध्यम से बाहर निकालने की कोशिश कर रहे थे वहीं मुख्यधारा के लोग इस घटना को मात्र दलित परिवार के साथ घटित एक सामान्य घटना के रूप में परिभाषित कर रहे थे | दामोदर मोरे जी ने यह कविता सन 2006 मे लिखी लेकिन आज भी दलित महिलाओं के उत्पीड़न की प्रतिशत मात्र बढ़ने के बजाय घटने का नाम ही नही ले रही रही है | समय तो बदल रहा है तेजी से लेकिन रूढ

मानसिकता आज भी बहुत कुछ वैसे ही है | मोरे जी की कविता स्त्रियों के प्रति आदर्श बघारने वाले संपूर्ण भारतीय संस्कृति और समाज के मुंह पर तमाचा की तरह है | यह भारतीय लोकतंत्र में दलित महिला की यथार्थ स्थिति का प्रमाण है जिसके आधार पर लोकतंत्र के रखवालों को इस मानसिकता वाले लोगो के खिलाफ कार्यवाही के साथ दलित महिलाओं के हकों ,अधिकारों और सुरक्षा को सुनिश्चित करना चाहिए -

प्रियंका भोत्मांगे की
खैरलांजी में घृणित हत्या हुई
तो क्या हुआ ?
अछूतों के साथ इससे अच्छा बर्ताव
हम क्या कर सकते थे ?
प्रियंका और सुरेखा के मातृअंगो में
हमने गाड़ दिये
बबूल के लम्बे -लम्बे कांटे |16

दामोदर मोरे सजग मानवीय संवेदना के साथ जिम्मेदार नागरिक होने के कारण अपने समय की नब्ज पर हाथ रखने वाले चैतन्य साहित्यकार् हैं | वर्षों पहले प्रकाशित दामोदर मोरे जी की कविता आज के समय की राजनीति से सीधा मुठभेड़ करती है | जिस राष्ट्र के निर्माण के लिए शहीदों ने कुर्बानी दी आज वही राष्ट्र अपने भीतर पनप रहे हैं राष्ट्रवाद के पारिणामस्वरूप हो रहे कत्लेआम से सशंकित है | बाबा साहब भारत के संदर्भ में राष्ट्रवाद की समस्याओं को समझ रहे थे ,इसीलिए वह राष्ट्रवाद को आज के राष्ट्रवाद से बिल्कुल अलग रूप में परिभाषित करते हुए राष्ट्रवाद को लोकतंत्र की अवधारणा से जोड़ते हैं,' समाज राष्ट्र और देश जैसे शब्द यदि स्पष्ट और संदिग्ध नहीं हैं तो भी उनका कोई निश्चित स्वरूप नहीं है | इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि राष्ट्र यद्यपि एक शब्द है लेकिन यह भिन्न समुदायों के अर्थ में प्रयुक्त होता है | दार्शनिक रूप से राष्ट्र को एक इकाई के रूप में मान लेना संभव हो सकता है लेकिन सामाजिक तौर पर ऐसा नहीं है क्योंकि यह भिन्न-भिन्न समुदायों से निर्मित है और राष्ट्र की वास्तविक स्वतंत्रता इसमें निहित विभिन्न समुदायों की स्वतंत्रता की गारंटी सुनिश्चित करने वाली हो,विशेषकर उन लोगों के लिए जिनके साथ सेवको जैसा व्यवहार किया जाता है |'17 भारतीय संविधान में भारत को राज्यों के संघ के रूप में 'INDIA THAT IS BHARAT' के नाम से अभिहित किया गया है लेकिन आज भारतीय राष्ट्र को हिंदू राष्ट्र या हिंदुस्तान बनाने की प्रक्रिया में राष्ट्रवाद गलत तरीके से संचालित एवं परिभाषित हो रहा है जिसकी वजह से यह नवनिर्मित राष्ट्रवाद अपने देश में ही भीतरी तौर पर सांस्कृतिक आतंकवाद को जन्म दे रहा है | वर्तमान समय में दलितों,आदिवासियों,और अल्पसंख्यकों आदि पर गोरक्षा,वंदेमातरम,लव जेहाद आदि के नाम पर हमले देखे जा सकते हैं | ' आज का जो हिंदू अंधराष्ट्रवाद है उसमें देश और जनता के प्रति कोई प्रेम नहीं है | दरअसल अंधराष्ट्रवाद एक लाठी है जो लोगों को मारने- पीटने और डरा धमका कर उनका मुंह बंद कराने के काम आती है |18 एन सिंह के शब्दों में कहें तो- 'अब सच को सच कहना / डराने लगा है / सावधान ! सांस्कृतिक आतंकवाद/ शिविरों में/ शस्त्र संचालन का/ प्रशिक्षण ले रहा है |'19 कवि दामोदर मोरे जी अपने ही देश के हालात को ही नहीं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तालिबानी करण की स्थिति में प्रवेश कर रहे देशों तथा वहां के आतंकी संगठन को आतंकवाद के दुष्परिणाम की तरफ इंगित करते हुए उन्हें बुद्ध की करुणा के रूप में संदेश देते हैं | मानवीय संहार के लिए प्रयुक्त विस्फोटक नही जानता हिन्दू ,मुस्लिम बल्कि वह मानव जाती का विनाशक है | इसलिए ,जब सभी के रक्त एक जैसे हैं तो संप्रदाय के नाम पर एक दूसरे की हत्या का जश्न कैसा ? सभी के रक्त का रंग एक है इसलिए सारे मनुष्य एक हैं -

बम नहीं होता हिंदू
बम नहीं होता इस्लाम
बम ले के आता है
हरेक की मौत का पैगाम
बम न हरा होता है
न भगवा होता है
बम से मरने वालों का लहू
लाल ही होता है |20

दामोदर मोरे बुद्ध दर्शन से प्रभावित कवि हैं| इसीलिए समाज, देश या विश्व स्तर पर कहीं भी मानवीय हिंसा उनके हृदय को विदीर्ण करती है | सहारनपुर का दंगा हो या गुजरात का दंगा उस से निकलती आग की लपटों में चीखती निरीह मानवता आज भी उनकी आंखों के सामने चीत्कार रही है | यही वजह है कि वह इन दंगों की आग को निरंतर अपने लेखन से ठंडा करने की कोशिश में है | इतना ही नहीं इस प्रक्रिया में वे इतने संवेदनशील हैं कि प्रकृति, हवा, और वर्षा भी उनके सहायक के रूप में प्रस्तुत हो रही है | कवि दामोदर मोरे के यहां प्रकृति की यह विशेषता उनके मौलिक एवं नवीन शिल्प की साक्षी है-

बारिश से मैंने पूछा-
'तू क्यों इतना तेज बरस रही है...?
वह बोली-
'दंगे में जले हुए मकानों को
मैं बुझा रही हूं |
हवा से मैंने पूछा-
'तू क्यों होले होले बह रही है?
वह बोली-
'दंगे के जख्मों को
मैं ठंड कर रही हूँ |21

बाबा साहब भीमराव अंबेडकर एवं मान्यवर कांशीराम साहब द्वारा राजनीति कि जो जमीन तैयार की गई थी उसी आधार पर आज दलितों के प्रतिनिधि के रूप में दलित एवं गैर दलित नेता विधानसभा

से लेकर संसद तक चुनकर जा रहे हैं | सवाल पूछा जा सकता है दलित वर्ग से उभरा है यह राजनीतिक नेतृत्व होने के बावजूद आज भी यह समाज अपने अधिकारों से वंचित कैसे रह गया ?इस समाज के अधिकारो और उसके शोषण कि बात आखिर कैसे दबा जाती हैं ? प्रोफेसर दामोदर मोरे जी राजनीति की इस गणित को बखूबी समझते हैं | इसका मुख्य कारण यह है कि इस वर्ग से चुनकर जाने वाले नेताओं में से अधिकांश नेता अपने निजी स्वार्थों की पूर्ति के लिए सामाजिक हितों की बलि चढ़ाकर अपने ही लोगों का खून पीना शुरू कर देते हैं | जिनसे यह उम्मीद कि गयी थी यह अपना उम्मीदवार हमारी समस्याओं को दूर करेगा, जिससे हमारा सर्वपक्षीय विकास होगा लेकिन ऐसा हुआ नहीं बल्कि वह अपने समाज से अलग सामंती प्रवृत्ति में पुष्पित पल्लवित होकर अपने ही लोगों से खुद को श्रेष्ठ समझता है-

ये नदियां
क्यों पी रही हैं
अपना ही जल
ये आम के पेड़
क्यों दे रहे
काँटों के फल
यह घना अंधेरा
मुझे ही क्यों डरा रहा है |22

दामोदर मोरे सत्ता का लाभ लेने के लिए नेताओं का शिकार बनाने वाले शिकारियो पर ही नहीं अपनी पैनी दृष्टि जमाएं हैं बल्कि राजनीति के बहुरूपिये ,दलालों के चरित्र को भी बखूबी पहचानते हैं , जिनकी स्वार्थी राजनीतिक चाल का खामियाज़ा पूरे दलित समाज को भुगतना पड़ता है | चंद दिनों के लिए अपने समाज, हित की बात तो करते हैं मामूली धन, पद की लालसा में उनका यह मिशन छलावा ही साबित होता है-

जो भोकते हैं
उसी के सामने फेंका जाता है
पद का टुकड़ा
उसे चबाते…
चखते रहने से
भौंकना बंद हो जाता है
मुंह में टुकड़ा होने की वजह से
अन्याय अत्याचार के खिलाफ
वह भौंक नहीं सकता |23

दामोदर मोरे अपनी कविताओं के माध्यम से आम जनता के मामूली मांग तक भी भारतीय लोकतंत्र के सामने रखते हैं | भारतीय समाज का कुछ हिस्सा ऐसा भी है जो आज भी भूखे पेट सोने के लिए अभिशप्त है | वह केवल सरकार से अपनी रोजी-रोटी की मांग करता है जिससे उनकी आजीविका चल सके | कवि मोरे जी भारत और इंडिया के भेद को बेनकाब करते हैं |भूखा भारत रो रहा है रोटी के लिए तो खाया-अघाया इंडिया भरेपेट के साथ गीत गा रहा है-

हरी भरी टहनियां बोल रही हैं
पक्षियों की पंचम बोली
गाउँ मैं कैसे गाना ?
भूखा पेट है खाली झोली
चाहत तो है मेरी
मिले काम,दाम, दाना
तभी मैं गाऊँगा
रोटी का गाना |24

देशभर में किसानों की आत्महत्या की प्रतिशत वृद्धि भारतीय लोकतंत्र के सामने यक्ष प्रश्न के रूप विद्यमान है | चिंतनीय बात यह है कि जो किसान अपने पसीने से सींचकर फसल उगाता है और पूरा देश उसके उगाये अन्न को खाता है, वही किसान भूख और कंगाली में आकर आत्महत्या करने को मजबूर है | दामोदर मोरे अपनी कविताई में ऐसे कई ज्वलंत समस्याओं को अपनी विशिष्ट संवाद शैली के माध्यम से उठाते हैं | इस मानवीय परिवेश में वर्तमान हालात को देखते हुए जब उन्हें कोई हल नही दिखाई देता है तब वह प्रकृति को अपनी सहचरी बनाते हैं और उसी के माध्यम से अपने मनोभावों को व्यक्त करते हैं | यह प्रकृति उनकी पीड़ाओं के अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनती है और यही प्रकृति उन्हें शांति और ढाढ़स भी देती है | दामोदर मोरे इसका प्रमुख कारण सत्ता में बैठे उन काँटों (नीतिनियंताओं) को माना जो फूल(भारतीय जनता)पर राज कर रहे हैं | मेरा भी यही मानना है कि देश में ईमानदारी से नीतिनियंताओं द्वारा यदि हमारे देश में मानवीय हितों को ध्यान में रखकर नीतियां निर्मित की जाए तो इन समस्याओं से निजात पाया सकता है-

कहां छिपा हुआ है
इंसानियत का झरना
बेर और बबूल के कांटे
कर रहे हैं राज
फूलों पर
और
आम का पेड़
खड़ा है नंगा
अपनी छाया खो कर
सत्ता के आंगन में |25

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर ने कहा था कि 'राजनीतिक सत्ता वह मास्टर चाभी है जिससे विकास का हर ताला खोला जा सकता है'|भारत की राजनीतिक विसंगतियों का परिणाम यह रहा कि लोकतांत्रिक राष्ट्र होने के बावजूद यहां के समस्त नागरिकों को आज

भी मूलभूत सुविधाओं से वंचित होकर जीवन व्यतीत करना पड़ता है |इसका प्रमुख कारण सत्ता का सही हाथों मे न होना तथा संवैधानिक व्यवस्था की दुर्दशा माना जा सकता है | प्रो दामोदर मोरे सामयिक परिदृश्य में लोकतंत्रिक कि नाजुक स्थिति तथा मानवीय अधिकारो से वंचित समुदाय की पीड़ा को स्वीकार नही कर पाते हैं | जिम्मेदार नागरिक होने के साथ उनका सहृदय मन क्रांतिमयी स्वर में बोलता है कि वह अपने आंखो के सामने भारत तथा भारतीय लोकतन्त्र कि यह स्थिति नहीं देख सकता है -

मैं देख नही सकता
नन्हें -मुन्ने बच्चों को
भूख कि आग में जलते हुए
मैं देख नही सकता
सत्य को गुलाम बनते हुए
मैं देख नही सकता
संवैधानिक व्यवस्था को
नंगा नाचते हुए |26

संघर्ष हमेशा वर्तमान स्थिति से मुक्ति तथा बेहतर स्थिति की आकांक्षा लिए हुए रहता है | दलित समाज का इतिहास लंबे संघर्षों का इतिहास है जो आज भी अनेक रूपों मे जारी है | दामोदर मोरे जी भी बचपन से लेकर अब तक इस संघर्ष की एक कड़ी के रूप में स्थापित हैं | अपने महापुरुषों की भांति उनकी दृष्टि में भी समता,स्वतंत्रता,न्याय एवं बंधुत्व से लबरेज भारत का स्वप्न है | भारतीय राजनैतिक आंदोलन हो या सामाजिक आंदोलन दोनों में ही उभरता युवा नेतृत्व इस स्वप्न को थोड़ा मजबूती प्रदान कर रहा है | यह उभा र अखिल भारतीय स्तर पर तेजी से हो रहा है | इन उभरते युवाओं के माध्यम से डॉ अंबेडकर की वैचारिक ज्वाला रोशनी विखेर रही है | इसका परिणाम हम 2 अप्रैल 2018 के भारत बंद के रूप में देख सकते हैं कि बगैर किसी राजनेता के अपने हको की रक्षा हेतु दलित एवं पिछड़े समाज के लोग राष्ट्रव्यापी आंदोलन तक करने में पीछे नही हटे | इससे यह उम्मीद् की जा सकती है कि 21 वीं सदी डॉ भीम राव अंबेडकर के सपनों की सदी होगी | कवि दामोदर मोरे लाचार लोकतंत्र में भी इसीलिए निराश नहीं हैं बल्कि उनको तो 21 वीं सदी के परिवर्तन की आहट अभी से सुनाई दे रही है -

ये मिट्टी की महक
किधर से
आ रही है ?
ये इंसानियत की
खुशबू किधर से
आ रही है ?
समय के घोड़े पर सवार होकर
अंधेरे को रौंदते हुए
सूरज को कौन ला रहा है ?
क्या ये
इक्कीसवीं सदी की
नीली सुबह तो नहीं है | 27

इस प्रकार दामोदर मोरे जी अपनी कविताओं के माध्यम से आज़ाद भारत की लोकतान्त्रिक विसंगतियों से आंखो मे आंखे डालकर संवाद स्थापित करते हैं | इस संवाद में कभी वह चीखते हैं ,कभी भावुक होते हैं ,कभी लोकतान्त्रिक भारत की स्थिति पर विचार करते हैं तो कभी मानवीय अधिकारो से वंचित समाज के पक्ष में कविताई वकालत करते हैं तो कभी इसके लिए सामाजिक आंदोलन का भी हिस्सा बनते हैं | इस संवाद के दौरान उनकी कविता का शिल्प न केवल मुख्यधारा के शिल्पाई दायरे को तोड़ता है बल्कि दलित कविता को नई एवं विशिष्ट शैली प्रदान कर उसे समृद्ध भी करता है | सूरज,रोशनी,अंधेरा,फूल,और नीला रंग आदि शब्द कवि के आशा,आकांक्षा के पर्याय के रूप में प्रस्तुत होते हैं | प्रकृति से संवाद के माध्यम से आज़ाद भारत की विसंगतियों पर प्रश्न खड़ा कर उससे संवाद स्थापित करना कवि दामोदर मोरे की कविता का यह विशिष्ट प्रयोग है,जो अन्यत्र कहीं दिखाई नही देता है | छोटी कविता के रूप में उनकी विशिष्ट काव्य शैली 'झपटिका' बेहद चर्चित है | इसकी खास विशेषता यह है कि पाठक के मानस पर अपने अर्थ सम्प्रेषण का ऐसा झपट्टा मारती है कि वह कुछ देर तक उसके अर्थ प्रभाव में डूबा रहता है | दामोदर मोरे जी एक झपटिका के माध्यम से पूरे दलित समाज को यह बात याद दिलाते हैं कि बाबा साहब ने कहा था ' मैंने तुम्हारे लिए जो भी किया है , वह बेहद मुसीबतों-दुखों और बेशुमार विरोधियों का मुकाबला करके किया है | यह कारवां आज जिस जगह पर है उस जगह पर बड़ी मुसीबतों से लाया हूँ | तुम्हारा कर्तव्य है कि यह कारवां सदा आगे ही बढ़ता रहे ,बेशक कितनी ही रुकावटें क्यों न आयें | यदि मेरे अनुयायी इसे आगे न बढ़ा सके ,तो यहीं छोड़ दें , पर किसी भी हालत में पीछे न जाने दें |अपने लोगों से मेरा यही संदेश है |' कवि दामोदर मोरे जी के मानस पर बाबा साहब की यह बात हमेसा रहती है | वह बाबा साहब के मिशन के जागरण के लिए हमेशा जाग्रत रहते हैं और लोगों को भी बाबा साहब के माध्यम से यही संदेश देना चाहते हैं कि बाबा साहब के द्वारा हम सभी के लिए किए त्याग और श्रम को याद रखते हुए हम सभी को उनके सपनों के प्रति सचेत और सतर्क होकर कार्य करना चाहिए | तभी बाबा बाबा साहब के सपनों का समाज निर्मित होगा -

बाबा साहब के पुतले से मैंने कहा -
'बाबा ऐसे क्या देख रहे हो ...?
वह बोले -अरे पगले ....मैं देख रहा हूँ
'तुम सोये हो या जग रहे हो .....|28

संदर्भ सूची

1. नीले शब्दों की छाया में, प्रो. दामोदर मोरे, सौरभ प्रकाशन, महालक्ष्मी प्लाज़ा साहिबाबाद, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण

2007,पृष्ठ संख्या 37
2. नीले शब्दों की छाया में, भूमिका ,प्रो. दामोदर मोरे ,सौरभ प्रकाशन, महालक्ष्मी प्लाज़ा साहिबाबाद,गाजियाबाद,प्रथम संस्करण 2007
3. सदियों के बहते ज़ख्म,अखिल भारतीय साहित्य परिषद टैगोर नगर मुंबई ,प्रथम संस्करण 2001,पृष्ठ संख्या 89
4. नीले शब्दों की छाया में ,प्रो. दामोदर मोरे ,सौरभ प्रकाशन,महालक्ष्मी प्लाज़ा साहिबाबाद,गाजियाबाद,प्रथम संस्करण 2007,पृष्ठ संख्या 07
5. वही,पृष्ठ संख्या 35
6. सदियों के बहते ज़ख्म,अखिल भारतीय साहित्य परिषद टैगोर नगर मुंबई ,प्रथम संस्करण 2001,पृष्ठ संख्या 97
7. अंबेडकरवाद का भक्तिकाल,भंवर मेघवंशी,https://m.thewirehind.com,03:01 pm ,feb 19,2019
8. नीले शब्दों की छाया में ,प्रो. दामोदर मोरे ,सौरभ प्रकाशन,महालक्ष्मी प्लाज़ा साहिबाबाद,गाजियाबाद,प्रथम संस्करण 2007,पृष्ठ संख्या 28
9. पलकें सुलग रही हैं ,प्रो. दामोदर मोरे ,अनुपम प्रकाशन,महालक्ष्मी प्लाज़ा साहिबाबाद,गाजियाबाद,प्रथम संस्करण 2002,पृष्ठ संख्या 49
10. सदियों के बहते ज़ख्म,अखिल भारतीय साहित्य परिषद टैगोर नगर मुंबई ,प्रथम संस्करण 2001,पृष्ठ संख्या 49
11. पलकें सुलग रही हैं ,प्रो. दामोदर मोरे ,अनुपम प्रकाशन,महालक्ष्मी प्लाज़ा साहिबाबाद,गाजियाबाद,प्रथम संस्करण 2002,पृष्ठ संख्या 18
12. भारतीय संविधान,भाग -3 मूल अधिकार,भारत सरकार विधि एवं न्याय मंत्रालय,नई दिल्ली ,09 नवम्बर 2015 को यथाविद्यमान ,पृष्ठ संख्या 13
13. Zeenews.india.com,friday,11:38pm ,23sep 2016
14. पलकें सुलग रही हैं ,प्रो. दामोदर मोरे ,अनुपम प्रकाशन,महालक्ष्मी प्लाज़ा साहिबाबाद,गाजियाबाद,प्रथम संस्करण 2002,पृष्ठ संख्या 24
15. सदियों के बहते ज़ख्म,अखिल भारतीय साहित्य परिषद टैगोर नगर मुंबई ,प्रथम संस्करण 2001,पृष्ठ संख्या 126
16. पिछला चक्का,प्रो दामोदर मोरे,सौरभ प्रकाशन,महालक्ष्मी प्लाज़ा साहिबाबाद,गाजियाबाद,प्रथम संस्करण 2007,पृष्ठ संख्या 45
17. दलित दर्शन की वैचारिकी ,वी.आर.विप्लवी ,वाणी प्रकाशन ,दरियागंज ,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 119
18. आज के आईने मे राष्ट्रवाद ,संपादक -रवीकान्त ,राजकमल प्रकाशन ,दरियागंज ,नई दिल्ली,प्रथम संस्करण 2018,पृष्ठ संख्या 17
19. दलित अस्मिता ,अक्टूबर -दिसम्बर 2016, पृष्ठ संख्या 83
20. सदियों के बहते ज़ख्म,अखिल भारतीय साहित्य परिषद टैगोर नगर मुंबई ,प्रथम संस्करण 2001,पृष्ठ संख्या 143
21. वही ,पृष्ठ संख्या 152
22. नीले शब्दों की छाया में ,प्रो. दामोदर मोरे ,सौरभ प्रकाशन,महालक्ष्मी प्लाज़ा साहिबाबाद,गाजियाबाद,प्रथम संस्करण 2007,पृष्ठ संख्या 12
23. वही,पृष्ठ संख्या 61
24. वही,पृष्ठ संख्या 19
25. वही,पृष्ठ संख्या 22
26. वही,पृष्ठ संख्या 33
27. वही,पृष्ठ संख्या 10
28ण सदियों के बहते ज़ख्म,अखिल भारतीय साहित्य परिषद टैगोर नगर मुंबई ,प्रथम संस्करण 2001,पृष्ठ संख्या 152